CHOITHRAM SCHOOL, NORTH CAMPUS

ANNUAL PADAGOGICAL PLAN-8th HINDI (TERM-1)

SESSION-2023-2024

What ARE The PROBLEMS?	COMPILATION OF PROBLEMS.		CATEGORISATION OF PROBLEMS [SPECIFIC AND BEHAVIOURAL]
उच्चारण में शुद्धता का अभाव, भावानुकूल वाचन का अभाव, हिंदी की विभिन्न बोलियों के शब्दों के पठन में कठिनाई।	वर्तनी प्रयोग की समझ तथा शब्द भंडार का अभाव, वर्तनी के सही रूप की समझ न होने के कारण उनके प्रयोग में कठिनाई, वार्तालाप के क ेषेत्रीय एवं आगत शब्दों के अधिकाधिक इस्तेमाल से स्तरानुसार उच्च		विशिष्ट (विषयपरक) समस्या -मानक वर्तनी प्रयोग तथा शब्द भंडार से संबंधित समस्या, स्वर तथा व्यंजन की उचित प्रयोग से संबंधित समस्या, विराम चिन्ह का उचित स्थान पर प्रयोग न कर पाना।
लंबे छंदों का होना तथा विराम चिन्हों का अभाव, पठन के दौरान गद्य और पद्य विधाओं के अनुसार वाचन में असमर्थ होना।	उच्चारणगत शुद्धता कीसमस्या/शब्दावली का अभाव के कारण शब्द तथा वाक्य संरचना रचना में समस्या , विराम चिन्ह का अभाव तथा भावानुकूल वाचन की समस्या		विशिष्ट (विषयपरक) समस्या - शब्दावली के अभाव + वर्तनीगत अशुद्धियों के कारण शुद्ध उच्चारण व वाक्य निर्माण का अभाव
बलाघात के प्रयोग में कमी।			
वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ जैसे स्वर संबंधी-इ(कवि-कवी)ई(श्रीमती-श्रीमति)ऊ(बहू-बहु)ऋ(मृग- म्रग)ॉ(वॉटर -वाटर)ऐ(कैसे- केसे) व्यंजन संबंधी, पढ़ाई -पड़ाई, ज्ञान- ग्यान, संज्ञा ,सर्वनाम ,वचन, विशेषण , क्रिया से संबंधित, र विभिन्न रूप से संबंधित (आर्शीवाद-आशीर्वाद, बृज -ब्रज),वर्णक्रम संबंधी (चिह्न-चिन्ह) वर्ण परिवर्तन संबंधी (दस्तकत -दस्तखत)	विषयानुरूप भाषा, वर्ण मैत्री व स्वर मैत्री के अभाव में तुकान्तक शब्दावली के प्रयोग में कठिनाई, विषयवस्तु का विश्लेषण कर क्रमबद्ध प्रस्तुति में कठिनाई (स्तारानुकूल नहीं), वर्तनीगत अशुद्धियाँ, प्रारूप सम्बन्धी कठिनाई, विषयवस्तु की सटीकता का अभाव, इकारांत उकारांत संबंधी समस्या, वर्णक्रम तथा वर्ण परिवर्तन संबंधी समस्या,		विशिष्ट (विषयपरक) समस्या - विषय के अनुसार रचनात्मकता तथाकल्पनाशीलता का अभाव |भाषा स्तारानुकूल नहीं, शब्दभंडार विज्ञान में कमी ,लेखन कौशल में विभिन्न प्रारूपों से सम्बन्धित अशुद्धियाँ, अतिरिक्त पठन तथा वाचन नहीं करना एवं वार्तालाप में क्षेत्रीय बोलियों का प्रभाव।
अनुच्छेद लेखन - अनुच्छेद लेखन से पूर्व रूपरेखा तैयार न करने के कारण एक ही पक्ष की व्याख्या करना, एक ही बात को बार-बार दोहराकर लिखना, अनावश्यक विस्तार व विषय से हट जाना, सजीव व प्रभावशाली भाषा शैली में कमी, दी गई शब्द सीमा से कम या ज्यादा लेखन कार्य या सारगर्भित लेखन चली में कमी, प्रभावपूर्ण तथा विषय अनुसार लेखन संबद्धता में कमी, परिच्छेद बनाकर लिखना।			व्यावहारिक समस्या -भाषा में रचनात्मकता और कल्पनाशीलता का अभाव | विश्लेषण क्षमता का अभाव | समयानुसार कार्य न करना (कक्षा कार्य, गृह कार्य विषय सम्बंधित अन्य गतिविधियाँ , अतिरिक्त वाचन में कमी, आत्मविश्वास में कमी |
पत्र लेखन - संबोधन व अभिवादन पर विशेष ध्यान न देना, पत्र लेखन के समय प्रमुख बिंदुओं जैसे नाम ,पता ,तिथि आदि को भूल जाना, प्रस्तुतिकरण में स्पष्टता का अभाव, मानक लेखन शैली की उपयोगिता में कमी, पत्र के उद्देश्यों को अच्छे से न समझ पाना, पत्र में प्रभावोत्पादकता की कमी होना, बोर्ड द्वारा सुझाए गए प्रारूपों में लेखन के दौरान त्रुटियाँ करना।			
संवाद लेखन-विचारों में प्रवाह, स्वाभाविकता तथा परस्पर संबध्दता में कठिनाई, पात्रों के मध्य संवाद में संक्षिप्ता की कमी, व्याकरणिक अशुद्धियाँ का होना तथा विराम चिन्हों का उचित प्रयोग न कर पाना, वार्तालाप के समापन में निश्चित परिणाम का न आना, वार्तालाप में रोचकता तथा सजीवता में कमी, पात्रों के मनोभावों एवं मुद्राओं को कोष्टक में लिखकर न दर्शना।			
अपठित बोध-दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक बार-बार न पढ़ना, धैर्य के साथ अध्ययन न कर पाना तथा परेशान व घबरा जाना, गद्यांश में दिए गए कठिन शब्दों को समझने में कठिनाई, गद्यांश का ठीक से एकाग्रता के साथ पठन न करना तथा मूल भाव को न समझ पाना, गद्यांश की उत्तर लिखते समय सरल व मौलिक भाषा का प्रयोग न करके गद्यांश के पूरे अंशों को उतार देना, गद्यांश की संक्षिप्त सार्थक एवं मूल भाव पर केंद्रित शीर्षक को देने में कठिनाई, कुछ प्रश्नों के उत्तर न मिल पाने पर अवतरण को पुनः एकाग्रचित्त होकर पढ़ने में कठिनाई।			
बोलना कौशल			विशिष्ट (विषयपरक) समस्या - उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कर उतार-चढ़ाव के साथ, भावानुकूल पठन/वाचन का अभाव
शुद्ध उच्चारण, उचित स्वर, गति एवं हावभाव के साथ वचन में कठिनाई, धाराप्रवाह नि:संकोच एवं परस्पर वार्तालाप के माध्यम से विचारों को अभिव्यक्त न कर पाना, शारीरिक चेष्टाओं हाव-भाव व नेत्र संपर्क के द्वारा वाचन करने में कठिनाई होना, शब्द भंडार में कमी होना, भाव अनुकूल वचन न होने पर प्रभावी वचन न कर पाना, अतिरिक्त वचन में कमी, आत्मविश्वास में कमी ,नवीन शब्दों का ज्ञान न होना।	वर्तनी की अशुद्धियाँ (उच्चारण सम्बन्धी), विराम चिह्नों का सही स्थान पर अनुप्रयोग नहीं करना, आत्मविश्वास का अभाव		व्यावहारिक समस्या - आत्मविश्वास की कमी, भावनाओं को जोड़ सकने तथा कल्पनाशीलता में अक्षम, संवेदनशीलता तथा जीवन मूल्यों का प्रभाव कम होना |
पढ़ना कौशल			
भाषागत उच्चारण में कमी, वर्तनी का ध्यान रखते हुए वाचन न	अर्थबोध के साथ उचित विराम का प्रयोग नहीं करना		व्यावहारिक समस्या - अर्थबोध का अभाव
श्रवण कौशल			
प्रवाह के साथ बोली जाने वाली हिंदी को अर्थबोध के साथ समझने में	एकाग्रता एवं उचित शब्द संपदा का अभाव		व्यावहारिक समस्या - एकाग्रता तथा रुचि का अभाव
आपसी सहयोग व सामंजस्य का अभाव (कक्षा में सामूहिक	समूह भावना का अभाव		व्यावहारिक समस्या - समूह भावना का अभाव

ANNUAL PADAGOGIAL PLAN - 8th HINDI (2023-2024)

KPI NAME	KPI DEFINATION	WHERE ARE WE NOW? (scale & description)	KPI GOAL	KPI LIMIT	WHAT WE NEED TO DO ?	HOW WILL IT BE ACHIEVED	KPI MEASUREMENT	REVIEW	KPI REPORTING/achivement	KPI Improvement
वर्तनी शोधन में तथा लेखन में सुधार के साथ ही साथ शब्द भंडार में विस्तार करना(भाषा का शिक्षण कक्षा में दर्जे के अनुसार करना)	1 वर्तनीगत अशुद्धियों के स्तर को निम्न करने का अभ्यास (इ कवि-कवी ई श्रीमती-श्रीमति, ऋ मृग-म्रग व्यंजन , अमानक रूपी आगत स्वर तथा उत्क्षिप्त व्यंजन संबंधी, र के विभिन्न रूप ,द्वित्व व्यंजन ,संघर्षी व्यंजन, संयुक्ताक्षर से संबंधित अशुद्धियाँ) LP 1,3,5,6	55% बच्चे लेखन के दौरान वर्तनीगत शुद्धियों का ध्यान रखते हैं जैसे- उत्तीर्ण, दस्तखत, व्यंग्य, मैं, नहीं, ज्ञान, गवर्नर, गोवर्धन, प्रज्वलित, आदि (कक्षा कार्य, गृह कार्य, सुलेख, श्रुतलेख, अनुलेख के द्वारा)	65%	±2	स्वर व्यंजन के उच्चारण स्थान का बोध व सही प्रयोग स्पष्ट करना। (कक्षा में शिक्षण के दौरान इस बात को बार-बार स्पष्ट करेंगे कि वैचारिक अभिव्यक्ति के लिए शब्दों का शुद्ध प्रयोग, भावानुकूल वाचन तथा उच्चारण अनिवार्य है, अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने में भी देर नहीं लगेगी ।) App-Implementing	श्रुतलेख, अनुलेख, वर्गपहेली, बूझो तो जाने आदि के द्वारा वर्णों के उचित प्रयोग व शब्दभंडार में वृद्धि करने का अभ्यास देकर वर्तनीगत अशुद्धि को दूर करने का और अधिक प्रयास किया जाएगा । कई बार क्षेत्रीयता, उच्चारण भेद और व्याकरणिक ज्ञान के अभाव के कारण वर्तनी संबंधी अशद्धियाँ हो	कक्षा अधिगम के दौरान	प्रत्येक पखवाड़े तथा माह के अंत में		
	सही उच्चारण व उचित शब्दकोष के द्वारा वाक्य संरचना करवाना (लिंग वचन कारक सर्वनाम विशेषण क्रिया आदि की वाक्य संरचना पर ध्यान देना।(अखबार पर क्या छपा है?- अखबार में क्या छपा है?L P 7,9,10,11,13	60% बच्चे लेखन के दौरान उचित शब्दावली व शुद्ध वाक्य निर्माण का ध्यान रखते हैं ।	70%	±2	वाक्य संरचना के नियमों का ध्यान रखना, मानक शब्दों का चयन करना तथा अर्थबोध हेतु उचित शब्दों का प्रयोग करना (अशुद्ध रूप –लाइट चली गई। शुद्ध रूप – बिजली चली गई।) (अशुद्ध रूप – यह नारियाँ गुणवान है। शुद्ध रूप – ये नरियाँ गुणवती है।) (बिजली के स्थान पर लाइट शब्द का	कक्षा के दौरान शब्द, छोटे-छोटे वाक्य निर्मित कर उसमें निहित भाव की स्पष्टता के द्वारा, स्वेच्छा से पसंदीदा विषय का चुनाव कर लिखित अभिव्यक्ति के द्वारा (रेखाचित्र लेखन, यात्रा वृतांत-अपने पसंदीदा कार्टून का) अनुच्छेद लेखन, रचना के आधार पर वाक्य,	दो पाठों के उपरांत	विषय संवर्धन गतिविधि तथा कला एकीकरण के बाद		
		60% बच्चे वाचन के दौरान सही उच्चारण व उचित शब्दावली के प्रयोग का ध्यान रखते हैं	65%	±2	अधिकांशतः क्षेत्रीयता, उच्चारण भेद, वाक्य विन्यास, मानक वर्तनी और व्याकरणिक ज्ञान के अभाव के कारण वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ हो जाती हैं। अधिगम के समय बात का भी ध्यान	कक्षा गतिविधि के माध्यम से-पाठ कबीर की साखियाँ पर कक्षा चर्चा (साखियों से मिलने वाली सीख का जीवन पर प्रभाव एवं महत्व) तथा क्या निराश हुआ जाए को कक्षा में	दो पाठों के उपरांत	दो पाठों के उपरांत		
	लेखन कार्य में रचनात्मकता तथा कल्पनाशीलता को बढ़ाना साथ ही साथ क्षेत्र बोलियों की त्रुटियों को कम करने का प्रयास करना। (हाव -हॉ, घिड़ी-तह)L P12,13,10,11,7	55% बच्चे लेखन गतिविधियों (विज्ञापन/संवाद/पत्र आदि) के दौरान विषयवस्तु की सम्बद्धता तथा कल्पनाशीलता को परिलक्षित करते हैं तथा क्षेत्रीय बोलियों के शब्दों के अनुचित प्रयोग को समझकर इसका ध्यान रखते हैं ।	70%	±3	शिक्षण पद्धति एवं कार्यप्रणाली में बदलाव (शिक्षण अधिगम में परिवर्तन, वास्तविक जीवन से जुड़े उदाहरणों को बढ़ाकर, हाव- भाव तथा आरोह अवरोह के साथ) समसामयिक व रुचिकर , दैनिक दिनचर्या विषयों का चुनाव; जिससे बच्चे की प्रस्तुति प्रभावी, सारगर्भित एवं सटीक होगी (कारण वे उस दिशा में सोच सकें), कहानी सुनाकर/विडियो दिखाकर\परिचर्चा करके\फ्लो चार्ट बनवाकर निहित विषयवस्तु के द्वारा	लाख की चूड़ियाँ कहानी है, जिसमें लेखन की विधाओं को सरलता से जोड़ा जा सकता है - 1. विभिन्न पदार्थों से से बनने वाली वस्तुओं के लेखन 2. संवाद लेखन का निर्माण, रचनात्मक विज्ञापन का निर्माण कबीर की साखियों के द्वारा दोहों से मिलने वाली सीख को जोड़ते हुए उसका प्रभावी लेखन-संवाद विधा तथा अनुच्छेद के द्वारा देकर (समाज में रह रहे लोगों के व्यवहार	दो पाठों के उपरांत	प्रत्येक पाठ के उपरान्त		
	पाठांत अभ्यास का प्रभावी अभ्यास	70% बच्चे पाठोपरांत प्रश्नों के उत्तर सटीक, रचनात्मक व प्रभावी रूप में देते है। (प्रश्नों के उत्तर बिंदु सटीक व स्पष्ट होते हैं) (प्रश्न को समझ कर उसमें निहित आशय के अनुरूप उत्तर का ध्यान रखते हैं तथा पाठांत अभ्यास में दी गई गतिविधियों को पूरी लगन से करते हैं।)	85	±3	प्रश्न निर्माण व सटीक उत्तर रचनात्मक सोच बिन्दुओं को समाहित कर प्रभावी उत्तर को स्पष्ट करेंगे । Evaluating-Checking	कक्षा में, पाठोपरांत विद्यार्थी प्रश्न निर्माण करेंगे , आशय स्पष्ट करो तत्पश्चात आपस में बनाये गए प्रश्नों के उत्तर (बिंदु रूप में) साझा करेंगे । बाज और साँप, पानी की कहानी, अकबरी लोटा ,सूर के पद, पाठों के दौरान	प्रत्येक पाठ के उपरान्त/ सत्रांत परीक्षा के दौरान	प्रत्येक पाठ के उपरान्त		
बोलना/पढ़ना-विराम चिन्ह का उचित स्थान पर अधिकाधिक प्रयोग करवाना , आत्मविश्वास में बढ़ोतरी करवाना तथा अतिरिक्त वचन का अभ्यास कराना।	5.1 शुद्ध उच्चारण व उचित उतार-चढ़ाव, आरोह अवरोह तथा हाव-भाव के साथ प्रभावी बोलना/पढ़ना LP1, 3,4,6,7,8,11	55% प्रदत्त किए गए विषयों के अनुरूप बोलने में सक्षम हैं ।(कक्षा गतिविधि तथा खुले मंच के आधार पर प्रभावी बोलना/पाठ पढ़ना)	65%	±3	बंधन मुक्त विषय पर बोलने का अवसर देकर, सस्वर वाचन तथा गलत बोलने पर सही उच्चारण हेतु प्रेरित कर बार-बार बोलने के लिए प्रेरित करेंगे और उन्हें प्रोत्साहित करेंगे।	पाठ कबीर की साखियाँ पर कक्षा चर्चा तथा निबंध क्या निराश हुआ जाए को कक्षा में विधा बदलकर प्रस्तुति करेंगे।	दो पाठों के उपरांत	प्रत्येक पाठ के उपरान्त		
	5.2 उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कर भावानुकूल पठन/वाचन करना जैसे- पूर्ण विराम, अल्प विराम, विस्मयादि बोधक आदि LP	60% बच्चे विराम चिह्नों का सही स्थान पर अनुप्रयोग करते हुए पठन/वाचन करने में कुशल हैं (कक्षा में पाठ के वाचन का तरीका)	70%	±3	आदर्श वाचन के पश्चात बच्चों को प्रेरित करेंगे, निःसंकोच अभिव्यक्ति का अवसर देंगे, कठिनाइयों का समाधान करेंगे , गलत बोलने पर सही उच्चारण हेतु प्रेरित	कविता यथार्थ है के साथ कोई अन्य मूल्य तथा नैतिकता पर आधारित कविता वाचन करेंगे, कहानी मंत्र को आधार बनाकर नवीन	दो पाठों के उपरांत	प्रथम सत्रांत के साथ		
अतिरिक्त वाचन का अभ्यास करवाना, आत्मविश्वास को बढ़ावा देना, भावनाओं को जोड़ने में कुशल बनाना।	6 कल्पनाशीलता को बढ़ाना, संवेदनशीलता तथा जीवन मूल्यों के प्रभाव को विकसित करना |LP 12,13,10,9,8	60% बच्चे कल्पनाशीलता के साथ अपने विचारों को पूर्ण आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करने में कुशल हैं। प्रदर्शन के दौरान विश्लेषण क्षमता का प्रभाव परिलक्षित होता है। (प्रश्नोत्तर/कक्षा चर्चा के द्वारा)	70%	±3	छोटे-छोटे तथा दैनिक जीवन से संबंधित विषय देकर उस पर विचार प्रस्तुत करेंगे, चेष्टाओं हाव-भाव व नेत्र संपर्क के द्वारा वाचन करने के लिए प्रेरित करेंगे उदाहरण देकर तथा उत्साह बढ़ाकर उसे अनुप्रयोग कर नवीन परिवर्तन निर्मित करने हेत	विषय के साथ सहायक बिंदु देकर उस पर विचार प्रस्तुति, पाठ में निहित मूल्यों पर चर्चा	सत्रांत के आधार पर	प्रथम सत्रांत के साथ		
	7 आपसी सहयोग व सामंजस्य की भावना विकसित करना L P 9,10,1,5	70% बच्चे कक्षा गतिविधियों तथा अन्य सामूहिक गतिविधियों (विषय संवर्धन गतिविधि तथा कला एकीकरण) के दौरान आपसी सहयोग, विश्वास व सामंजस्य की भावना परिलक्षित करते हैं ।	80%	±2	वर्तमान से संबंधित छोटे-छोटे प्रेरक प्रसंगों , घटनाओं को बच्चों के साथ साझा करेंगे तथा आपसी सहयोग , तालमेल से होने वाले फायदे, विकास एवं महत्त्व की समझ विकसित करने हेतु प्रेरित करेंगे। Evaluate-Critiquing	समूह की गतिविधियों के द्वारा सहयोग, भाईचारा, सहभागिता व उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करना । पानी की कहानी, अकबरी लोटा ,क्या निराश हुआ जाए पाठों के दौरान	विषय संवर्धन गतिविधि के आधार पर	त्रैमासिक संवर्धन गतिविधि तथा कला एकीकरण के बाद		

समय पर कार्य करवाने के लिए प्रेरित करना(कक्षा कार्य, गृह कार्य, परिचर्चा,विषय सम्बंधित अन्य गतिविधियाँ)	8 समय नियोजन के महत्व को समझाना LP 7 ,9,12	75% बच्चे अपना कार्य नियत समयावधि में पूर्ण करते हैं (कक्षा कार्य/गृह कार्य पुस्तिका, विषय संवर्धन गतिविधियों का क्रियान्वयन)	80%	±2	समय के महत्व तथा उपयोग को समझाकर उन्हें दिए गए गृह कार्य/भाषायी गतिविधियों को समयांतराल में रचनात्मक तरीके से पूर्ण करने हेतु प्रेरित करेंगे तथा उत्साहवर्धन करेंगे। Evaluate-Critiquing	समय के महत्व पर परिचर्चा कर जीवन मूल्यों का विकास करना । कबीर की साखियाँ, बस की यात्रा, पानी की कहानी, अकबरी लोटा पाठों के दौरान	त्रैमासिक परीक्षा के आधार पर	त्रैमासिक संवर्धन गतिविधि के बाद		